ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

नारी जीवन का खुला दस्तावेज राज बुद्धिराजा की कहानियाँ

सिमी एस

शोध छात्रा
केरल विश्व विद्यालय
कार्यवट्टम कैंपस केरल
Sureshsimi89@gmail.com

नारी तथा उसका जीवन हमेशा साहित्यकारों का प्रिय विषय रहा है। कहानी लेखन के प्रारंभिक दशा में लेखकों ने नारी के प्रति अपने दृष्टिकोण के आधार पर उनके जीवन को कागजों में उतारने का प्रयास किया था। बाद में इने-गिने लेखिकाओं का उदय हुआ जिन्होंने स्वतंत्रता संबधी रचनाओं के साथ ही नारी जीवन पर भी प्रकाश डालने की कोशिश की थी। स्वतंत्रता के बाद नारी, शिक्षा को पहले से ज्यादा प्रमुखता देने लगी और घर के चारदीवारी से भी बाहर निकली। नारी के विकास के साथ-साथ उसके जीवन में अनेक नयी समस्याओं का भी उदय होने लगा। साठोत्तर समय में अनेक महिलाएं कहानी लेखन से जुड़ गईं। जिसमे उन्होंने अपने अनुभवों को तथा अपने आसपास के ज़िन्दगी को शब्दबद्ध करने का सफल प्रयास किया है। उनमें श्रीमती राज बुद्धिराजा का विशेष महत्त्व है। उन्होंने अपनी कहानियों द्वारा नारी जीवन की विभिन्न पहलुओं को पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है। उनकी कहानियों में विभिन्न परिवेश व आयु की औरतों के जीवन तथा उससे जुड़ी बातों व संघर्षों का उल्लेख किया गया है। राज जी की कहानियों में चित्रित नारी जीवन को निम्न शीर्षकों के अंतर्गत परखना समीचीन होगा।

लड़कियों का जीवन

समाज में व परिवार में कभी-कभी लड़कियों का जीवन संघर्षमय हो जाता है। लड़की को बोझ मानने वाला समाज उसकी शिक्षा या खुशियों पर ध्यान ही नहीं देता। बेटे-बेटियों में भेद-भाव रखने वाले घरवालों के कारण लड़कियों के जीवन में जो दुःख व घुटन पैदा होता है वही 'नीली कोठी', 'एक थी हवेली' आदि कहानियों का विषय है। अपने बेटों के जन्मदिन पर भंडारे करने वाले परिवार वाले बेटी का जन्मदिन याद भी नहीं करते। 'एक थी कलम, एक था दर्द' में अपनी ही माँ से उपेक्षित पारो की कहानी है। दूसरों के सामने अपनी बेटी को तोहफा तक देने में हिचकती माँ के चित्रण के साथ ही अपनी सभी परिस्थितियों से लड़कर जीवन में विजय प्राप्त करनेवाली पारो का भी चित्रण कहानी को रोचक बना दिया है। बचपन में ही विवाह संबंध से जुड़ी लड़की के जीवन का उल्लेख है 'दादी के ब्याह' तथा 'तिल्लेदार

टोपी' कहानियों में। आर्थिक अभाव के कारण माँ-बाप द्वारा दूसरे घर में नौकरी के लिए भेजने से लड़कियों को भोगनी पड़ी यंत्रणाओं का चित्रण 'एक थी हिमती' कहानी का विषय है। बालश्रम के चित्रण के साथ ही नौकरी के बीचों बीच चुपचाप पढ़कर जीवन में सफलता प्राप्त करती हिमती पाठकों को भी प्रेरित करने वाली है। अपने व्यक्तित्व को बनाए रखने के लिए शादी के मंडप से भागती लड़की की कहानी है 'क्षमादान दो'। 'जूठन' कहानी के माध्यम से लेखिका ने बालश्रम के नाम पर छोटी लड़कियों पर हो रहे अत्याचार व बलात्कार को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है। अनाथ लड़कियों के जीवन की ओर इशारा करने वाली राज जी की कहानी है 'तोशी'। अच्छे संस्कार से युक्त लड़की के प्रति लोगों के लगाव 'फिर आना' कहानी का विषय है। शराबी पिता के कारण संघर्ष झेलती लड़की की कहानी है 'खट्टो'। इसप्रकार राजजी ने लड़कियों के जीवन व उससे जुडी समस्याओं को उजागर करने का सफल प्रयास किया है ।

विवाहिता नारी का जीवन

विवाह नारी जीवन में क्या-क्या बदलाव लाता है, उसका चित्रण राज जी ने किया है। साथ ही संतुष्ट व असंतुष्ट दांपत्य की ओर भी उनका ध्यान गया है। पति द्वारा घोर यंत्रणाएं सहती पारो की कहानी है 'पारो नहीं आएगी'। पति के अहंकार व लापरवाही के कारण अपनी जान खोती युवती की कहानी है 'लकीरें'। 'खाली वरके' तथा 'ब्याहता' कहानियों में शराबी व शंकालु पति के कारण तड़पती नारी का चित्रण लेखिका ने बहुत ही मार्मिक रूप से किया है। छोटे उम्र में शादी होने से परिवार का दायित्व अपने कन्धों पर लेती हुयी औरत का चित्रण है 'तिल्लेदार टोपी' में । शराबी पति के कारण अपने बच्चे के लिए नौकरी करती सुंदरी की कहानी है 'लात साहब'। मायके व ससुराल वालों से उपेक्षित नारी के विद्रोही मन के चित्रण के साथ ही अकेले बुरे परिस्थितियों से लड़कर अपना अस्तित्व को बनाये रखनेवाली नारी के संघर्ष की कहानी है 'पारो खुश है'। आलसी पति व पुत्र के कारण जीवन भर संघर्ष करती औरत की कहानी है 'रिश्ते'। संतानहीन नारी के जीवन संघर्ष को उजागर करने वाली राज जी की कहानी है 'उपहार'। प्रस्तुत कहानी में दूसरों के बच्चों को भी अपना मानकर उनका पालन पोषण निःस्वार्थ रूप से करने वाली ममतामयी नारी का चित्रण राज जी ने किया है। अनचाहे व्यक्ति से हुई शादी के कारण तड़पती नारी जीवन का चित्रण 'पटरियाँ' कहानी में राज जी ने किया है। जीवन में आए सभी कठिनाईयों को धीरज के साथ सामना करने में पति का साथ देती औरत का चित्रण 'फौजी' कहानी में हुआ है। विवाह के बाद मायके वालों से तिरस्कृत होने से नारी मन में उत्पन्न संघर्ष का चित्रण 'बाबुल का घर' कहानी में हुआ है जो पाठकों को भी सोचने के लिए मजबूर कर देता है। ससुराल व मायके में नारी के प्रति जो

बरताव होता है उसके सकारात्मक पक्ष को उजागर करने वाली कहानी है 'रसोई'। शादी के बाद एक बड़े घर की ज़िम्मेदारी को अकेले संभालने वाली औरत की कहानी है 'भाभी'। पति के संपत्ति के अनुसार बेटी को मायके में इज्जत मिलता है। इससे जुड़ी कहानियाँ हैं 'ऐसा ही है', 'मत जाओ पारो' आदि। इस प्रकार दांपत्य संबंधी लगभग सभी विषयों को अपने कहानियों में सम्मिलित करने में राज जी ने सफलता प्राप्त किया है।

अविवाहिता नारी का जीवन

अविवाहित नारी के मन में हो रहे सपनों का तथा कई कारणों से शादी न करने वाली औरतों की मानसिकता तथा उसके जीवन को राज जी की कहानियों में हम देख सकते हैं। 'पटरियां' में अपने दुल्हे की प्रतीक्षा कर कल्पना की दुनिया में रहती नारी का चित्रण है। 'फौजी' कहानी में अनेक रिश्तों को टकराकर अपने सपने के फौजी से विवाह करने की चाहत करती लक्ष्मी की कहानी है। घरवालों की खुशियों के लिए तथा समाज के भय से अपने प्यार को छोड़ने के लिए विवश होती नारी की कहानी है 'तुमने बताया क्यों नहीं', 'कहा था ना' तथा 'एक थी अनूप'। मूक होने के कारण विवाह संबंधी अपने सपनों को अन्दर ही अन्दर दबाकर एक काल्पनिक दुनिया में जीने वाली औरत की कहानी है 'गुड्डी'। समाज का अविवाहित नारी के प्रति क्या दृष्टिकोण है उसका चित्रण राज जी ने किया है। साथ ही विवाह पूर्व नारी मन से जुड़े सपनों का भी उल्लेख राज जी की कहानियों में हमें देखने को मिलते हैं। घरवालों के भय से एक दूसरे से चुपचाप प्रेम करने वाले प्रेमियों की कहानी है 'आखिर क्यों?'। लेखिका ने मनोवैज्ञानिक ढंग से पात्रों का गढ़न करने का प्रयास किया है।

माँ का जीवन

संतान के प्रति माँ का जो प्रेम व ममता है उसे सबसे अनमोल मानता है। माँ अपने संतान के लिए कोई भी कष्ट सहने को तैयार होती है। पति द्वारा उपेक्षित हो या विधवा हो वह अपने संतान के पालन में कोई कमी नहीं रखती। लेकिन माँ के प्रति संतान की मानसिकता कभी-कभी इसके ठीक उल्टे होते हैं। राज जी के 'रिश्ते', 'नेहा का नेह', 'अपना अपना सुख', 'खाली वरके', 'जूझते हुए', 'संदूकची', 'शहतीर वाली छत', 'बीबी रानी' आदि कहानियों में इसका चित्रण है। इकलौते बेटे द्वारा उपेक्षित माँ के अकेलापन व घुटन की कहानी है 'हरा समंदर'। अपनी बालिका बहु को बेटी मानकर उसके लिए रोटी – सब्जी बनाती माँ का चित्रण 'दादी का ब्याह' कहानी में हम देख सकते हैं। अपनी ही मन को घर की नौकरानी बनाकर हर पहली तारिख में उसे वेतन देने वाली बेटी की तथा उससे माँ के मन में उत्पन्न संघर्ष

को चित्रित करनेवाली राज जी की कहानी है 'तलाश'। चक्रव्यूह में अपने स्वार्थ के लिए सास को पुत्र और परिवार से दूर रखने वाली नारी के जीवन में जब वैसी स्थिति आती है तो उसके पछताने का चित्रण लेखिका ने किया है। इस प्रकार प्रत्येक कहानी पाठकों को सोचने के लिए मजबूर करने वाली है।

वृद्ध नारी का जीवन

पुराने समय में माँ-बाप को ईश्वर के समान मानते थे। लेकिन आजकल इसमें परिवर्तन आ गया है। भोगो-फेंको संस्कृति से प्रभावित नयी पीढ़ी अपने बूढ़े माँ-बाप की संपत्ति प्राप्त कर उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़कर विदेश जा बसते हैं या अकेले छोड़कर परिवार के साथ कहीं दूर रहते हैं। 'रिश्ते' नामक कहानी की बूढी माँ अपनी विवाहित बेटी की प्रतीक्षा में रहती है। पर वह कभी भी माँ से मिलने नहीं आती । 'वसीयत' में वृद्ध नारी जीवन के चित्रण के साथ ही साथ नारी मन के गूढ़ विचारों को भी व्यक्त किया है तथा वसीयत की मांग करते संतानों के लालच के लिए उचित दंड देने वाली माँ का चित्रण है। अवकाश प्राप्त नारी के जीवन की त्रासदी का अंकन है 'जूझते हुए' में। वृद्ध नारी जीवन के अकेलेपन, मानसिक संघर्ष तथा आकांक्षा का चित्रण 'हरा समंदर', 'सं गच्छहवं', 'वापसी', 'शालो' आदि कहानियों का विषय है। 'दादी का ब्याह', 'रेत का टीला' आदि कहानियों में दादी को मानने वाले तथा उसके बातों को सुनने वाली नयी पीढ़ी का चित्रण है। मध्यवर्गीय परिवार की उपेक्षित वृद्ध नारी के जीवन पर आधारित कहानी है 'वे लौट आई'। 'वेतन' कहानी में एक वृद्ध नारी के जीवन तथा उसके प्रति बहुत ही श्रद्धा रखने वाने मायके की चौथी पीढ़ी का उल्लेख है। पति, बेटे व पुत्र वधु के करतूतों से तंग आकर आखिर उन्हें सबक सिखाने वाली वृद्ध महिला की कहानी है 'घर'। वृद्धावस्था में नारी को सहनी पड़ती अकेलापन, तिरस्कार आदि के साथ ही उनके प्रति नयी पीढ़ी के सम्मान भावना का भी उल्लेख राज जी ने किया है।

विधवा नारी का जीवन

विधवा नारी के प्रति समाज का जो बुरा दृष्टिकोण है वह आजकल कुछ बदला है । फिर भी उसे जीवन में और कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। राज जी की कहानी 'नेहा का नेह' में विधवा जीवन की विसंगतियों का चित्रण किया है। बहुत ही छोटी उम्र में विधवा हुई नेहा के प्रति समाज का दृष्टिकोण तथा अपने सपनों को सफ़ेद कपड़े के अन्दर छिपाती नेहा की मानसिकता का चित्रण लेखिका ने बहुत ही सुन्दर तरीके से किया है। 'अपना-अपना सुख' में बेटे के शादी के बाद माँ को भोगनी पड़ी अकेलापन का चित्रण है। 'संदूकची' कहानी एक ऐसी विधवा की कहानी है जो अपने और बच्चों के भूख मिटाने के लिए कई नौकरियां करती है। 'निम्मो' एक विधवा नारी के जीवन संघर्ष की कहानी है। विधवा

होने से ससुरालवाले व मायकेवालों से उपेक्षित नारी के संघर्षमय जीवन को चित्रित करने वाली कहानी है 'यात्रा'। विधवा को अपशकुन मानने की पुरानी प्रथा आजकल बदल गयी है। लेकिन उसे अपनाने में आज भी समाज हिचकता है। लेखिका इस ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहती हैं।

परित्यक्ता नारी का जीवन

पुराने समय में दांपत्य को पवित्र माना जाता था। लेकिन पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नयी पीढ़ी छोटी छोटी बातों को लेकर झगड़ती है और तलाक तो अब सामान्य सी बात हो गयी है। 'अपना-अपना सुख' कहानी में परित्यक्ता नारी को बच्चों के पालने में हुई कठिनाईयों का चित्रण है। कितना गहरा पानी कहानी में मायके व ससुराल वालों से उपेक्षित नारी के आत्म संघर्ष को उजागर करने का प्रयास किया है। मूलधन का ब्याज कहानी में पति द्वारा उपेक्षित होने पर भी बेटे की अच्छी देखभाल करने वाली नारी का चित्रण है। अपंग बेटी को जन्म देने के कारण ससुराल से निकालने पर अकेली रहकर बेटी की देखभाल करनेवाली नारी व उसकी बेटी की कहानी है 'मेरा कोई बाप नहीं'। परित्यक्ता नारी के अकेलापन, जीवन संघर्ष आदि से जुड़ी कहानियाँ हैं 'खानाबदोश', 'शालो' आदि। आर्थिक अभाव, अकेलापन, समाज व घरवालों से तिरस्कार आदि परित्यक्ता नारी से जुड़ी समस्याओं को राज जी ने आवाज़ दिया है।

अपंग नारी का जीवन

बेटी के ही जन्म से दुखी होते दुनिया अपंग बच्ची को कैसे स्वीकार करेगी ? राज जी ने अपनी कई कहानियों में इस समस्या को उजागर करने का प्रयास किया है। 'गुड्डी' एक मूक लड़की से जुड़ी कहानी है जिसकी देख-रेख के लिए परिवार वालों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। दोनों बाँहों के बिना जन्म लेने से पिता द्वारा उपेक्षित लड़की की कहानी है 'मेरा कोई बाप नहीं'। जब बेटी जीवन में सफलता प्राप्त करती है तो पिता उसे घर ले जाने आते हैं। नारी उत्थान से जुड़ी कहानी है यह। मूक-बधिर लड़कियों के माँ-बाप की मानसिकता तथा इंसानियत से जुड़ी कहानी है 'सुगंध'।

अंधविश्वास और नारी जीवन

राज जी ने हमारे समाज में आज भी व्याप्त अंधविश्वास व नकली ज्योतिषियों का चित्रण अपनी कहानियों द्वारा व्यक्त करने का प्रयास किया है। 'जन्मपत्री' कहानी के माध्यम से लोगों के विशवास से लाभ उठानेवाले तथा 'अवधूत' के माध्यम से भोली-भाली युवतियों के जीवन बरबाद करने वाले नकली संतों की और उंगली उठाई है। 'शनिदेव का प्रकोप', 'जल समाधि', 'सुन्दरपुर की कुटिया', 'भज

गोविन्दम' आदि भी अंधविश्वास से जुड़ी कहानियाँ हैं। लेखिका के अनुसार अधिकतर औरतें ही इन संतों के जाल में फंसकर उन्हें पैसे देती हैं। 'परशाद' कहानी में तो अंधविश्वास के कारण साधू से गर्भवती बनती लड़की की कहानी है, जिसे साधू अपने बावले शिष्य को प्रसाद के रूप में सौंपकर खुद की रक्षा करता है। इन कहानियों के माध्यम से लेखिका नकली संतों पर भरोसा करने वालों को तथा लड़कियों को उनके पास छोड़कर जाने वालों पर तीखा व्यंग किया है।

कामकाजी नारी का जीवन

घर के अन्दर की स्त्रियों की अपेक्षा कामकाजी औरतों को और कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आफिस के काम के साथ ही घर के कामों को भी उसे अकेले संभालना पड़ता है तो उसकी मानसिक तनाव बढती है। राज जी इस विषय से परिचित थीं। अतः उन्होंने अपनी रचनाओं में कामकाजी नारी के मानसिक संघर्षों को भी उजागर करने का प्रयास किया है। 'नेहा की नेह' कहानी की नायिका को स्कूल के कामों के साथ ही घर के सभी कामों को भी निपटना पड़ता है। कामकाजी महिलाओं के घर के तथा बाहर के जीवन व मानसिक संघर्ष की कहानी है 'स्पर्श'। घरवालों से तथा समाज से संघर्ष कर अपने अस्तित्व को बनाए रखने में नारी की तमाम समस्याओं को तन्मयता के साथ प्रस्तुत करने में राज जी ने सफलता प्राप्त की है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि राज जी ने अपनी कहानियों द्वारा नारी जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं व संघर्षों को चित्रित करने के साथ ही उन समस्याओं को सुलझाने का उपाय भी बता दिया है। लेखिका का मानना है कि शिक्षा नारी को संघर्ष से लड़ने की शक्ति प्रदान करने वाला सफल हथियार है। उसके बिना नारी को आगे लाना मुश्किल है। शिक्षा के ज़रिये आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त नारी समाज में अपना व्यक्तित्व बना देती है। अत: शिक्षा एवं नौकरी का नारी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। राज जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से यह उजागर करने के साथ-साथ स्वावलंबित होकर समाज को भी उद्धृत करने का सन्देश देती है। राज जी ने अपनी रचनाओं द्वारा अंधविश्वास, धोखेबाज़ी, बनावटी प्रेम आदि को नकारकर मानव प्रेम, व्यक्तित्व, समान भावना आदि को ज़ोर देने का प्रयास किया है। राज जी ने अपनी नारी पात्रों को मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रित किया है। निसंदेह कहा जा सकता है कि राज जी की कहानियाँ नारी जीवन का खुला दस्तावेज है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. पारो खुश है – राज बुद्धिराजा
2. हरा समंदर - राज बुद्धिराजा
3. कितना गहरा पानी - राज बुद्धिराजा
4. राज बुद्धिराजा व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ मोहन सावंत